श्लोक नं॰ 33

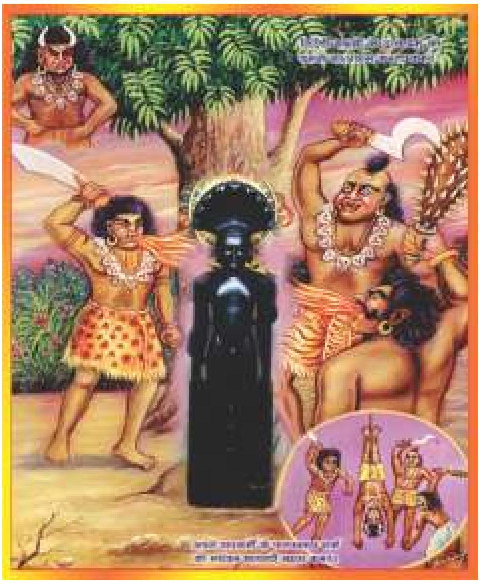

पिशाच का उपसर्ग व्यर्थ

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति मर्त्य मुण्ड -
प्रालम्बभृद्-भयदवक्त्र विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःख - हेतुः॥ 33॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

प्रभु को तप से विचलित करने पिशाच दौड़ाए।
नर मुण्डों की माला पहने खुले केश वाले॥
गगनचुम्बी अग्नि की लपटें मुख से निकल रहीं।
क्रूर कमठ की द्वेषाग्नि ही मानो उगल रही॥
ऐसे अनगिन प्रेत भयङ्कर शठ ने भिजवाए।
स्वयं बँधे कर्मों से प्रभु का कुछ ना कर पाए॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 33॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं

विण्महर्द्धि-विसंयोगात्, पुंसां रोग-विनाशकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 33॥

ॐ ह्रीं अर्हं विडौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **ध्वस्त किए हैं अष्ट कर्म को हुए कर्मजेता।**
मोक्षमार्ग के आप प्रणेता नमूँ धर्मनेता॥ 1793॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **स्तोत्र आपका भव्यों के सब संकट हरता है।**
भक्त मगन होकर भक्ति से मुक्ती वरता है॥ 1794॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **ऊर्ध्वलोक के अग्रभाग पर आप शोभते हो।**
सुमरन कर्त्ता भव्य जीव के दु:ख मेटते हो॥ 1795॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र्ध्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **केशरिया-केशरिया कहते भव-भव बीत गए।**
भाव हुए ना केशरिया ना निज के मीत हुए॥ 1796॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **शत-शत बार नमन है मेरा मन निर्मल कर दो।**
राग-द्वेष को मिटा दीजिए विरागता भर दो॥ 1797॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **विष अमृत हो शत्रु मित्र हो प्रभु के सुमरन से।**
परम यशस्वी हो जाते हैं प्रभु के अर्चन से॥ 1798॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **कृष्ण वर्ण तन के धारी साँवलिया पारसनाथ।**
एकमात्र ही आप सहारे हे नाथों के नाथ॥ 1799॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तारणहार हमारे तुम ही कर्त्तापन से दूर।
ज्ञाता-दृष्टा हो सबके प्रभु नन्त शक्ति भरपूर॥ 1800॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. कृतार्थ हूँ मैं दर्शन पाकर आनन्दित भी हूँ।
कहा आपने निश्चय से मैं प्रभु जैसा ही हूँ॥ 1801॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तिर्यञ्चों ने भी जिनदर्शन कर व्रत को धारा।
देशसंयमी बनकर पाया स्वर्ग सौख्य न्यारा॥ 1802॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मर्त्य लोक से करूँ अर्चना पास न आ सकता।
श्रद्धा नयनों से लखकर मन पुलक-पुलक उठता॥ 1803॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. त्यक्त वस्तु को त्याग आप जिनराज हुए त्यागी।
राग आग को जला-जलाकर हुए वीतरागी॥ 1804॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मुण्डन सिर का बहुत सरल है कठिन दोष का नाश।
सरल अन्य को समझाना दुर्लभ निज ज्ञान प्रकाश॥ 1805॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मुण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. डगर-डगर पर शूल बिछे हैं कर्म असाता के।
द्वार आपके कैसे आऊँ भगवन् मैं चल के॥ 1806॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ड' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. प्राण प्रतिष्ठा से पत्थर भी पूजित हो जाता।
प्रभु-वन्दना से वन्दक भी वन्दित हो जाता॥ 1807॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. आलम्बन पा नाथ तिहारा मिलता है आनन्द।
आवश्यकता नहीं जगत की कहता है यह मन॥ 1808॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. **ब**सन्त ऋतु में मधुर स्वरों में कोयल ज्यों गाती।
भक्ति की पावन बसन्त ऋतु मेरे मन भाती॥ 1809॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ब' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. गुण**भृद्** होने से प्रभुवर को ऋषि मुनि पूज रहे।
पाप कर्म के बन्धन उनके तड़-तड़ टूट रहे॥ 1810॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भृद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. **भ**वन और वन समान जिनके उन यति को वन्दन।
मुनि सम बनकर भगवत् पद में शाश्वत करूँ रमण॥ 1811॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. **य**थाख्यात चारित्र प्राप्ति हित पूजन करता हूँ।
शुद्ध स्वभाव प्रकट करने को विधान रचता हूँ॥ 1812॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. **द**र्शन आवरणी का क्षयकर केवलदर्श धरा।
पार्श्वप्रभु ने शुद्ध सिद्धिरमणी को शीघ्र वरा॥ 1813॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. **वक्**ता नाथ आपसे उत्तम कोई नहीं जग में।
दिव्यदेशना सुनकर भविजन बढ़ते शिवमग में॥ 1814॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. **त्र**स आदिक पर्यायें सब व्यवहार नयाश्रित हैं।
पर्यायों में मूढ़ आतमा ही भव-वासित है॥ 1815॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. **वि**जयपताका फहराई प्रभु कर्म शत्रु जीते।
धन्य-धन्य हैं हर-पल निजानुभव रस को पीते॥ 1816॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. **निर्मम होकर विभाव अरि पर तीक्ष्ण प्रहार किया।**
तोड़ दिए सारे बन्धन निज पर उपकार किया॥ 1817॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. **यहाँ धरा पर नाथ आपके जयकारे गूँजे।**
अष्ट द्रव्य का थाल लिए सब श्रद्धा से पूजे॥ 1818॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. **दग्ध कर दिए अष्ट कर्म ध्यानाग्नि से स्वामी।**
महिमा सुनकर भक्ति करने आया जगनामी॥ 1819॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दग्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. **निःशङ्क होकर भव-अटवी से मुझे निकलना है।**
नाथ आपका नाम निरन्तर मुझको जपना है॥ 1820॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. **प्रेरित होकर पूर्व पुण्य से मिला जैनशासन।**
बड़भागी को ही मिलते हैं प्रभुवर के दर्शन॥ 1821॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. **तव भक्ति करके भगवन् मन शान्ति पाता है।**
जग में कहीं मिली ना ऐसी मिलती साता है॥ 1822॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. **व्रत पालन कर भव्य जीव शुद्धातम लखता है।**
संयम पूर्वक मोक्षमहल की सीढ़ी चढ़ता है॥ 1823॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. **रजः ज्ञान दर्शनावरण की प्रभुवर ने नाशी।**
अखण्ड अक्षय शिवनगरी के आप हुए वासी॥ 1824॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. प्रदीप अनबुझ पूर्णज्ञान का जला दिया स्वामी।
लोकालोक चराचर जाने पार्श्वप्रभु नामी॥ 1825॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तिर्यक् नरक गति में मैंने दुःख बहुत पाए।
नर गति से सिद्धि पाने अर्चन करने आए॥ 1826॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भजकर नाम आपका भगवन् चेतन सुख पाता।
अपलक निहारने को मेरा पल-पल मन करता॥ 1827॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. वन्दनीय तुम सा ना जग में कोई दूजा है।
इसीलिए त्रय योगों से हे भगवन् पूजा है॥ 1828॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तपा-तपाकर ध्यानाग्नि में कर्म जलाए हैं।
प्रभुवर परम शुद्ध परमातम को प्रकटाए हैं॥ 1829॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मन में तन में और वचन में प्रभु ही प्रभु बसे।
भाव यही है मेरे भगवन् आठों कर्म नशे॥ 1830॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. पीर बहुत भोगी है अब तक धीर बँधाओ नाथ।
कोई न जग में दुख का साथी भक्त पुकारे आज॥ 1831॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिझा सकूँ मैं निज से ही रूठे परमातम को।
दुःख दिया भव-भव भटकाया मैंने ही निज को॥ 1832॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तोड़ सकूँ पर से मैं नाता ऐसी शक्ति दो।
निज भगवन् को देख सकूँ प्रभु ऐसी भक्ति दो॥ 1833॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यः[1] सोता है वह खोता है अतः जाग जाओ।
कहा प्रभु ने स्वात्म रुचि धर साम्य भाव पाओ॥ 1834॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सोऽहं बाल अज्ञ हूँ फिर भी भक्ति करता हूँ।
भक्ति करके कर्म नाश की शक्ति पाता हूँ॥ 1835॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्याद्वाद के प्रस्तोता प्रभुवर को वन्दन है।
सत्पथ-दर्शक पार्श्वप्रभु जी का अभिनन्दन है॥ 1836॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. भरतखण्ड के तीर्थङ्कर की पूजा करता हूँ।
पूजन करके मैं निज को बड़भागी कहता हूँ॥ 1837॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. विधिवत् जो शिवपथ पर चलता सिद्धि पाता है।
मैं ही क्या उनको सारा जग शीश नवाता है॥ 1838॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. प्रशस्त हो परिणाम प्रतिक्षण अतः पूजता हूँ।
उपादान नित जागृत हो मम यही चाहता हूँ॥ 1839॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिल तुष मात्र परिग्रह हो तो मुक्ती नहीं वरती।
प्रभु कहते इच्छा है तब तक शान्ति नहीं मिलती॥ 1840॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. भविष्य होवे मेरा जो है वर्तमान प्रभु का।
चाह नहीं कुछ जग की मुझको यही भाव मन का॥ 1841॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वंद्य हुए हैं नाथ आप बन्धन का क्षय करके।
पूज्य हुए हैं परिणामों को पवित्र ही करके॥ 1842॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. जो

51. भव से हूँ भयभीत अत: मैं शरणागत स्वामी।
द्वय चरणों में शरण दीजिए प्रभुवर शिवगामी ॥ 1843॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वर्णों से वर्णन ना सम्भव तव अनन्त गुण का।
अत: मूँदकर नयन करूँ मैं ध्यान पार्श्व जिन का॥ 1844॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दु:सह दुख को भोग-भोग कर बहुत थका स्वामी।
भाग्य उदय से आज आपके द्वार रुका स्वामी॥ 1845॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दु:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. खरा शुद्ध शिव सुख पाने का लक्ष्य बनाया है।
जग के सारे द्वार छोड़ प्रभु का दर भाया है॥ 1846॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हे जिन मुझको कर्म नाश की शक्ति दे देना।
निर्विकार होने की भगवन् युक्ति दे देना॥ 1847॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. चतु: शरण मङ्गल उत्तम यह कहती जिनवाणी।
जो जिन मङ्गल शरण गहे वह सुख पाता प्राणी॥ 1848॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

मुण्ड माल पहने भयकारी पिशाच दौड़ाए।
किन्तु रहे प्रभु ध्यान मग्न वे कुछ ना कर पाए॥
स्वयं कर्म से बँधा कमठ आखिर में पछताया।
शान्त वीतरागी छवि लख पूर्णार्घ्य भक्त लाया॥ 33॥

ॐ ह्रीं श्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रव जयनशीलाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं॰ 34

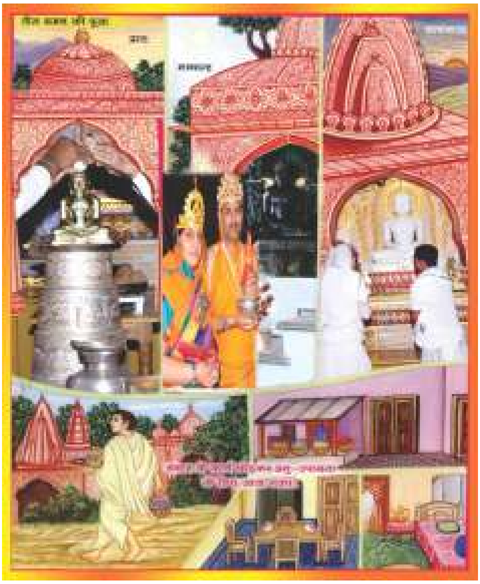

भक्ति से भक्त भी धन्य

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसंध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य - कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशाः
पादद्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः॥ 34॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

अङ्ग-अङ्ग जिनका भक्ति से रोमांचित होता।
सर्व कार्य तज प्रथम प्रभु भक्ति में लय होता॥
तीनों संध्याओं में विधिवत् जो प्रभु भजन करे।
धन्य-धन्य वे प्राणी अपना जीवन सफल करे॥
हे नाथों के नाथ प्रभु जी पावन पारसनाथ।
पल पल करूँ आपका सुमरन चरण नमाऊँ माथ॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 34॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

सर्वौषधर्द्धिसम्पन्नान्, निःशेषामयनाशिनः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 34॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौषधर्द्धिप्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

चौपाई

1. **धन्य-धन्य प्रभु का जीवन है, क्योंकि निराकुल जिन भगवन् हैं।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1849॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **न्यायवान हो आप जिनेश्वर, निज-पर भेद जानते प्रभुवर।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1850॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **ध्वस्त किया है मोह यन्त्र का, जाप जपूँ तव नाम मन्त्र का।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1851॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **एक आतमा प्रभु को भायी, लीन हुए उसमें जिनरायी।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1852॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ए' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **वर्धन होता स्वातम सुख का, प्रभु दर्श से क्षय हो दुख का।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1853॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **भुवनत्रय में आप हितङ्कर, दुखित जनों को प्रभु क्षेमङ्कर।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1854॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **वसुविध कर्म नशाए स्वामी, मोक्षनगर पहुँचे शिवधामी।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1855॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **नाशवान पर पदार्थ छोड़े, परिजन से प्रभु नाता तोड़े।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1856॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. **विधि बतलाते शिव पाने की, त्रिविधि कर्म को क्षय करने की।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1857॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **पतितों को करते प्रभु पावन, रूप आपका है मनभावन।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1858॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **येन-केन शिवसुख पाना है, भव दुःखों का क्षय करना है।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1859॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **त्रिलोक में तुमसा ना दूजा, अतः भाव से तुमको पूजा।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1860॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **सन्मति दाता आप जिनेश्वर, सत्य पन्थ दिखलाते जिनवर।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1861॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **मध्यलोक से नमन करूँ मैं, शीघ्र मोक्षपथ गमन करूँ मैं।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1862॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **मान और माया को तजकर, करूँ अर्चना मन थिर रखकर।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1863॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. **रात-दिवस मैं तव गुण गाऊँ, तव भक्ति में ही रम जाऊँ।**
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1864॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. धर्मचक्र चलता है आगे, नमे इन्द्र प्रभु सम्मुख आके।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1865॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. जयन्ती जन्म सुखद हैं घड़ियाँ, भव्य-जनों की हर्षित अँखियाँ।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1866॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. शांति मिलती प्रभु दर्शन से, अन्तर्ज्योति जले अर्चन से।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1867॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विधान से विपदाएँ टलती, छिपी हुई निज सम्पद दिखती।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1868॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. निधि निज में जो छिपी हुई है, जिनभक्ति से मुझे दिखी है।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1869॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. विधिवद् जो प्रभु ध्यान धरे हैं, विभाव का विध्वन्स करें वे।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1870॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विदेह पद की धुन रहती है, देह दशा ये अब खलती है।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1871॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. साधु होकर सिद्ध बने हैं, उनको मेरे नमन घने हैं।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1872॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तारतम्य भावों का जग में, सिद्धप्रभु सब ही इक सम हैं।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1873॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मान्य हुए सब जग में स्वामी, नाथ आप भविजन प्रियनामी।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1874॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. कृत्य आपके जग से न्यारे, हैं अनन्त उपकार तुम्हारे।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1875॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. भव्याः भक्ति कर शिव पाते, शाश्वत काल वहाँ बस जाते।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1876॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. भक्त भक्ति में सदा मगन है, निजानुभव की लगी लगन है।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1877॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नित्योद्घाटित ज्ञान तिहारा, सर्व विश्व का जाननहारा।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1878॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. वल्लभ हो प्रभु शिवललना के, नन्त सुखी हो शिवसुख पाके।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1879॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल्ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सत्स्वरूप आतम अनुभवते, निज शुद्धातम में प्रभु रमते।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1880॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. पुनर्जन्म ना प्रभु का होता, घृत का दुग्ध नहीं बन पाता।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1881॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लक्ष्य मोक्ष का जो रखते हैं, शुद्ध चिन्मयी रस चखते हैं।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1882॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. कल्मष सारे धुल जाते हैं, जो प्रभु की शरणा पाते हैं।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1883॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पक्ष्मल यानि व्याप्त ज्ञान है, पार्श्वनाथ जिन को प्रणाम है।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1884॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पक्ष्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. महान हो सारे त्रिभुवन में, नाथ पधारो मेरे मन में।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1885॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लम्बा पथ है सिद्धनगर का, लिया सहारा श्री जिनवर का।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1886॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. देवालय में आप विराजे, दर्शन कर सब संकट भागे।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1887॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. हम भक्तों के आप सहारे, डगमग नैया तारणहारे।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1888॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. दे दो दर्श खड़ा हूँ कबसे, दर्श बिना ना जाऊँ दर से।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1889॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. धीशाः सर्व जिनेश कहलाते, पूर्ण ज्ञानपति को सिर नाते।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1890॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पाता है वह अन्तर साता, जो श्रद्धा से तव गुण गाता।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1891॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. दयासिन्धु मम संकट हरिए, सब विकार मेरे क्षय करिए।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1892॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. द्वय चरणों में नमन हमारा, अनगिन को प्रभु तुमने तारा।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1893॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. स्वयं नाथ पुरुषार्थ जगाया, दुष्कर्मों को दूर भगाया।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1894॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तरह-तरह के द्रव्य सजाए, नाच-गान कर चरण चढ़ाए।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1895॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वर्तमान तीर्थङ्कर स्वामी, शीश झुका वन्दूँ ध्रुवधामी।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1896॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. विमल गुणों के निलय तुम्हीं हो, सब दोषों से रहित तुम्हीं हो।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1897॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. भोर हुई है अब जीवन की, जब मैंने प्रभुवर पूजन की।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1898॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51\. भुवि पर भविजन करें प्रतीक्षा, मम उर में राजो यह इच्छा।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1899॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52\. विरले जीव सिद्धपद पाते, गहन भवोदधि वे तिर जाते।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1900॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53\. जन्मान्तर में जिनवर पाऊँ, नहीं एक पल तुम्हें भुलाऊँ।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1901॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54\. मद मर्दक हे वामानन्दन, कोटि-कोटि श्रद्धा से वन्दन।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1902॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55\. भाग्यवान ही दर्शन पाते, अपना सोया भाग्य जगाते।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1903॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56\. रजः कर्म की दूर कीजिए, निज सम मुझको बना लीजिए।
प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ, तीन योग से अर्घ्य चढ़ाऊँ॥ 1904॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

तन भक्ति से रोमांचित है, त्रय सन्ध्या में मनन लीन है।
मैं भी शुभ पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ, बार-बार प्रभु शीश नवाऊँ॥ 34॥
ॐ ह्रीं श्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 35

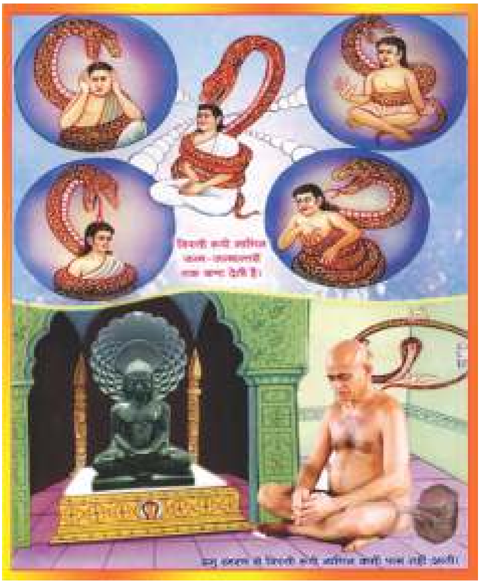

प्रभु नाम न लेने का फल

अस्मिन्नपार भव - वारि - निधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण - गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र - पवित्र - मन्त्रे
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति॥ 35॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

इस अपार भवसागर में भव-भव से दुख पाया।
क्योंकि आपका नाम कर्ण से कभी न सुन पाया॥
नाम मन्त्र श्रद्धा से यदि मैं जप लेता इक बार।
विपदाओं की नागिन मुझको क्यों डँसती हर बार॥
पूर्व काल में गलती की तो अब पछताता हूँ।
वर्तमान में पार्श्व नाम की माला जपता हूँ॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 35॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं।

मनोबलर्द्धि सम्प्राप्तान्, हृदि सर्वाङ्गचिन्तकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

स्रग्विणी छन्द

1. अस्त होता रवि रुक न सकता कभी।
मृत्यु को कोई भी रोक सकता नहीं॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
मोक्ष के मार्ग पर नित्य चलता रहूँ॥1905॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मिल न पाया मुझे तीर भवसिन्धु का।
क्यों फँसा हूँ जगत में न सुख बिन्दु सा॥ पार्श्व०॥ 1906॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. अन्न से देह चलता है कहते सभी।
भक्ति से भक्त की जिन्दगी चल रही॥ पार्श्व०॥ 1907॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. पार कैसे करूँ नाव डगमग करे।
नाथ आश्रय बिना भक्त कैसे तिरे॥ पार्श्व०॥ 1908॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रम्य है जिन छवि एकटक देख लूँ।
सारे संसार से अब नज़र फेर लूँ॥ पार्श्व०॥ 1909॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. भव्य जीवों के भगवन् हुए मीत हैं।
भक्त-जन को प्रभु आपसे प्रीत है॥ पार्श्व०॥ 1910॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वन्दनम् वन्दनम् वन्दनम् जिनवरम्।
नाथ त्रय लोक में आप ही हो परम्॥ पार्श्व०॥ 1911॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. **वाचनिक भक्ति से कर्म कटते नहीं।**
आत्म श्रद्धा से दुष्कर्म रहते नहीं॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
मोक्ष के मार्ग पर नित्य चलता रहूँ॥1912॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. **रिक्त है मेरी झोली हृदय की प्रभो।**
ज्ञान समकित व चारित से भरिए विभो॥ पार्श्व०॥ 1913॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. **निर्जरा कर वरी सिद्धिललना अहा।**
पाँच कल्याणकों से सहित जिनवरा॥ पार्श्व०॥ 1914॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. **धौत यानि धवल भाव प्रभुवर धरें।**
शुक्ल लेश्या परम धार शिवसुख वरें॥ पार्श्व०॥ 1915॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धौ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. **मुख से वाणी खिरी जैसे फुलवा खिरे।**
सुन वचन आपके भव्य भव से तिरे॥ पार्श्व०॥ 1916॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. **नीलमणि से अधिक कान्तिमय देह है।**
वीतरागी प्रभु से मुझे नेह है॥ पार्श्व०॥ 1917॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. **शब्द हैं अल्प गुण आपके नन्त हैं।**
कैसे गुण गाऊँ मैं मम मति अल्प है॥ पार्श्व०॥ 1918॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. **मन्त्र का रूप है स्तोत्र यह आपका।**
पाठ से नाश होता है सब पाप का॥ पार्श्व०॥ 1919॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ये नवों ही निधि आपने प्राप्त की।
पा गए आप संज्ञा प्रभु आप्त की॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
मोक्ष के मार्ग पर नित्य चलता रहूँ॥1920॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नय तरङ्गों से युत भङ्ग सप्त कहें।
सर्व द्रव्यों में स्वातम ही मुख्य रहे॥ पार्श्व०॥ 1921॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मेरा उपयोग प्रभु आपमें ही लगा।
सन्निधि आपकी पा निजातम जगा॥ पार्श्व०॥ 1922॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. श्रम किया आज तक भोग धन के लिए।
आ गया शर्ण अब सिद्धपद के लिए॥ पार्श्व०॥ 1923॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वर्गणाएँ करम की बुलाता रहा।
राग औ द्वेष से नित्य दुख पा रहा॥ पार्श्व०॥ 1924॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. णमोकार के दो पद में जिन आप हो।
भक्त के आप मेंटे सभी ताप को॥ पार्श्व०॥ 1925॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. गो गजादि सभी धन विनाशिक रहे।
स्वात्म उपलब्धि सम्पद ही अविनाश है॥ पार्श्व०॥ 1926॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. चउ मुखी दिख रहे जिन समोसर्ण में।
नर मुनि सुर पशु झुक रहे चर्ण में॥ पार्श्व०॥ 1927॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'च' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रह सकूँ न प्रभुवर तुम्हारे बिना।
कोई है ना सहारा तुम्हारे सिवा॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
मोक्ष के मार्ग पर नित्य चलता रहूँ॥1928॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वर्धताम्-वर्धताम् कह रहे देव हैं।
कर रहें जब विहार श्री जिनदेव हैं॥ पार्श्व०॥ 1929॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ताम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. गर्भ कल्याण में देवियाँ आ रहीं।
वामा माता की सेवा से हर्षा रहीं॥ पार्श्व०॥ 1930॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तोड़कर सर्व बन्धन प्रभु चल दिए।
आतमा से प्रभु स्वात्म में रम गए॥ पार्श्व०॥ 1931॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. वैद्योऽसि जगत में हो श्रेष्ठ तुम्हीं।
भव्य भव रोगियों को करें स्वस्थ ही॥ पार्श्व०॥ 1932॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. आप्त हो आप आनन्द से पूर्ण हो।
अर्ज है कर्म की शक्तियाँ चूर्ण हों॥ पार्श्व०॥ 1933॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. कर्णप्रिय आपकी दिव्य-वाणी लगी।
सो रही थी अनादि से आतम जगी॥ पार्श्व०॥ 1934॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मणि मुक्ता चढ़ाने को लाया नहीं।
आपके ही प्रति उर में श्रद्धा भरी॥ पार्श्व०॥ 1935॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेज लख आपका सूर्य छिप ही गया।
चाँद लखकर चमक अहो शरमा गया॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
मोक्ष के मार्ग पर नित्य चलता रहूँ॥1936॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. ऋतु भक्ति की सौभाग्य से आ गई।
वीतरागी छवि आज मन भा गई॥ पार्श्व०॥ 1937॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तप की अग्नि जलाई प्रभो आपने।
कर्म आठों नशाएँ विभो ध्यान से॥ पार्श्व०॥ 1938॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वश किया आपने आपको ही स्वयं।
बन गए हो प्रभो आप पावन परम॥ पार्श्व०॥ 1939॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. गुण के गोदाम भगवन् भरे आपमें।
भक्ति कर लग रहा हो प्रभु सामने॥ पार्श्व०॥ 1940॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यत्र-तत्र प्रभो आप सर्वत्र हैं।
ज्ञान से तीन ही लोक में व्याप्त हैं॥ पार्श्व०॥ 1941॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. पर पदार्थों में आसक्त जो हो रहा।
जागकर भी वो अज्ञानी है सो रहा॥ पार्श्व०॥ 1942॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. विरत हैं जो कषायों से उनको नमूँ।
नन्त गुणधर के सम स्वात्म रस को चखूँ॥ पार्श्व०॥ 1943॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. त्रय विधि कर्म से आप निर्मुक्त हैं।
तीन रत्नों से जिनराज संयुक्त हैं॥ पार्श्व०॥ 1944॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मन्द भावों से मैं नाथ भक्ति करूँ।
आपके दर्श से आत्म शक्ति धरूँ॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
मोक्ष के मार्ग पर नित्य चलता रहूँ॥1945॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रेधा वन्दन करूँ मन वचन काय से।
जाप निशदिन करूँ आपको ध्याय के॥ पार्श्व०॥ 1946॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. किंकिणी आदि बजते समोसर्ण में।
आ गया हूँ प्रभु आपके चर्ण में॥ पार्श्व०॥ 1947॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वारिधि ज्ञान के ज्ञान दे दीजिए।
आप ही नाथ उद्धार मम कीजिए॥ पार्श्व०॥ 1948॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विस्मरण कर सकूँ सर्व परद्रव्य का।
एक लघु भक्त हूँ आपके चर्ण का॥ पार्श्व०॥ 1949॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. पद्म आसन विराजे खिरी देशना।
सुन सकूँ नाथ प्रत्यक्ष मम भावना॥ पार्श्व०॥ 1950॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. विकृति कर्म की दूर कर आपने।
पा लिया मोक्ष साम्राज्य जिनराज ने॥ पार्श्व०॥ 1951॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. षड्गुणी हानि वृद्धि सदा हो रही।
हे प्रभो! आपमें शुद्धता ही रही॥ पार्श्व०॥ 1952॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धर्म उपदेश दे सर्व मङ्गल किया।
पाप तम में भ्रमे भव्य को पथ दिया॥ पार्श्व०॥ 1953॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. रीत जग की सभी तोड़ दी आपने।
प्रीत कर सिद्धि से पाया सुख आपने॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
मोक्ष के मार्ग पर नित्य चलता रहूँ॥1954॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सर्व को जानकर भी नहीं मान है।
इसलिए आप कहलाते भगवान हैं॥ पार्श्व०॥ 1955॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विरह में भक्त रोता है क्रन्दन सुनो।
नाथ इक बार आओ हृदय में बसो॥ पार्श्व०॥ 1956॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. अबन्धं अकायं चिदानन्द हो।
तीन लोकों के नाथों से भी वन्द्य हो॥ पार्श्व०॥ 1957॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. सम्पदा नन्त गुण की प्रभो प्राप्त की।
भक्त ने भक्ति अतएव दिन-रात की॥ पार्श्व०॥ 1958॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मेट दो सर्व संकट मेरे जिनवरा।
इस जगत में है केवल प्रभु आसरा॥ पार्श्व०॥ 1959॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिहुँ जग में न दूजा प्रभु आप-सा।
आत्म धन से धनी हो सुखी शाश्वता॥ पार्श्व०॥ 1960॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

कभी नाम प्रभु का सुना ही नहीं।
इसलिए विपदा नागिन डँसे जा रही॥
पार्श्व जिनराज का नाम जपता रहूँ।
अर्घ्य श्रद्धा से पद में चढ़ाता हूँ॥ 35॥

ॐ ह्रीं श्रीं पवित्रनामधेयाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 36

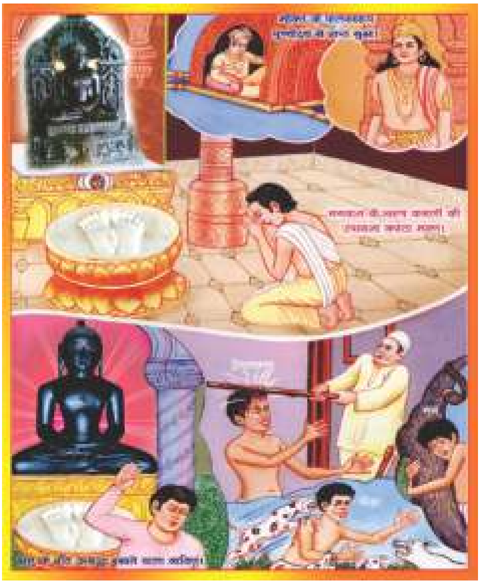

प्रभु पूजा न करने का फल

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव!
मन्ये मया महितमीहित - दान - दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानाम्
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्॥ 36॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

जगह-जगह पर भगवन् मेरा लोग करे अपमान।
हृदयभेदी मैं तिरस्कार का पात्र बना भगवान॥
क्योंकि पूर्व भवों में मैंने कभी नहीं पूजा।
वाञ्छित फल दातार आप सम और नहीं दूजा॥
बहुत सह लिया दुःख प्रभु अब सहा नहीं जाता।
चरण-शरण दो नाथ आप बिन रहा नहीं जाता॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 36॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं।

वचोबलर्द्धि-संयुक्तान्, वाचा विश्वाङ्गपाठकान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 36॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. जन्मादिक रोग नशाए, प्रभु स्वस्थ सुखी कहलाए।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1961॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. श्रीमान् आप कहलाते, गुण नन्त लक्ष्मी प्रकटा के।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1962॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तड़पा हूँ मैं भव-भव से, अब तृप्त हुआ दर्शन से।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1963॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रे मन प्रभु की भक्ती कर, प्रभु कहें शीघ्र मुक्ती वर।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1964॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. मोक्षेऽपि यस्य नाकांक्षा, वह भव्य सिद्धि को पाता।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1965॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तमहारी प्रभु की वाणी, सब जगती की कल्याणी।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1966॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वर्णादिक गुण सब तन के, ज्ञानादिक हैं चेतन के।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1967॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. पापी भी पावन होता, जिनवच सुन अघ-मल धोता।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1968॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. दलितों पर दया करें जो, करुणा का सागर हैं वो।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1969॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. युग-युग कई बीत गए हैं, अब प्रभु के दर्श किए हैं।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1970॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. गम्भीर छवि मन भायी, हैं वीतराग अतिशायी।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1971॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. नभ में नहीं फूल खिलेगा, सुख भोगों में न मिलेगा।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1972॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. देवाधिदेव कहलाते, प्रभु-पद में सुरगण आते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1973॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वरमाला शिववधू डाले, सब तोड़ दिए विधि ताले।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1974॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मन्तव्य प्रभु सब जानो, सब लोकालोक पिछानो।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1975॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. प्रत्येक समय प्रभु ध्याऊँ, इक पल नहीं प्रभु भुलाऊँ।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1976॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मम मति तव सङ्गति चाहे, दिखलाते प्रभु शिव राहें।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1977॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. याचक बन दर पर आया, शिवपद ही मम मन भाया।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1978॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. मति सन्मति करने वाले, दुर्बुद्धि हरने वाले।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1979॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हिम गिरि ज्यों गल-गल जाता, प्रभु सम्मुख मद गल जाता।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1980॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तन्मयता से जो पूजे, उसको निज आतम सूझे।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1981॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मीमांसा करूँ न पर की, परिणति सुधारूँ निज की।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1982॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हित जो भी निज का चाहे, वह चले प्रभु की राहें।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1983॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तप करके नहीं दिखाना, गुरु कहें गुप्त तप करना।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1984॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. दाता शिवमारग के हो, प्रभु भविजन के तारक हो।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1985॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. नयनों से प्रभु को निरखूँ, निज-पर पदार्थ को परखूँ।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1986॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. हे दयासिन्धु अखिलेश्वर, दुष्कर्म हरो मम जिनवर।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1987॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मोक्षं तत्त्वं सुखदाता, बन्धास्रव है दुखदाता।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1988॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तेरा-मेरा सब तजकर, आया हूँ अब प्रभु दर पर।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1989॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नेत्रों से आप न दिखते, हम नयन मूँद कर लखते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1990॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हरदम तव भक्ति करूँगा, जब तक ना मोक्ष वरूँगा।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1991॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. जन्मान्ध देख ना पाता, मिथ्यामति दर्श न पाता।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1992॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. मणि मुक्ता देव चढ़ाते, अर्चन करके सुख पाते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1993॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. निर्दोष प्रभु का आतम, कहलाते हैं परमातम।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1994॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मुनियों के ईश कहाते, गणधर भी तव गुण गाते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1995॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नीले-नीले प्रभु नयना, बहता करुणा का झरना।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1996॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शक्ति अनन्त प्रभु पाई, कर्मों की सैन्य भगाई।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1997॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. पलकों से राह बुहारूँ, प्रभु पारस तुम्हें पुकारूँ।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1998॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रागादि रहित जिनरायी, ज्ञानादि सहित अतिशायी।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 1999॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. भवि भागन वश प्रभु मिलते, वचनामृत सुन मन खिलते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2000॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वात्सल्य वारिधि नामी, जन-जन के अन्तर्यामी।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2001॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. भव्यानां प्रिय भगवन्ता, कहलाते हैं शिवकन्ता।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2002॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. जागो-जागो सुर कहते, दुन्दुभि गगन में बजते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2003॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तोड़े कर्मों के बन्धन, ऐसे प्रभु का अभिनन्दन।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2004॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. निशदिन भक्ति जो करते, वे शीघ्र मुक्ती को वरते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2005॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. केवलज्ञानी को पूजूँ, वसु विधि कर्मों को खण्डूँ।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2006॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'के' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तट पाया भवसागर का, मैं भक्त बना तव दर का।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2007॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नत मस्तक जो हो जाते, वे सिद्धालय को पाते।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2008॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मद से मति दुर्मति होती, पंचमगति कभी न मिलती।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2009॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. हंता विभाव भावों के, नेता हो दस धर्मों के।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2010॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. **म**म ज्ञान कक्ष में आओ, आकर के नाथ जगाओ।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2011॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. **थि**र हुए आप स्वातम में, फिर पहुँचे ज्ञान गगन में।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2012॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. **ता**दात्म्य जीव का गुण से, परद्रव्य भिन्न हैं निज से।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2013॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. **श**क्ति अनन्त प्रकटाई, प्रभु सिद्धिवधू परिणाई।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2014॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. **या**दों में प्रभु की सोया, सपने में प्रभु को पाया।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2015॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. जीवा**नाम्** प्रतिपालक हो,प्रभु अनन्त के ज्ञायक हो।
चरणों में शीश झुकाऊँ, श्री पार्श्वप्रभु को ध्याऊँ॥ 2016॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पूजा न पूर्व में स्वामी, अतएव सदा दुखभारी।
अब चरण-शरण दो भगवन्, करता हूँ अर्घ्य समर्पण॥ 36॥

ॐ ह्रीं श्रीं पूतपादाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।